

## भास के नाटक 'स्वप्नवासवदत्ता' में पर्यावरण संरक्षण का चिंतन: एक विश्लेषण

डॉ. हुकुम सिंह मण्डलोई

सहायक प्राध्यापक- संस्कृत

भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डॉ अम्बेडकर नगर (महू ) जिला - इंदौर

**सारांश :-** भास के नाटक 'स्वप्नवासवदत्ता' में पर्यावरण संरक्षण का चिंतन हमें गहराई से देखने को मिलती है। इस नाटक में वत्सराज उदयन और वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन है साथ ही मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य का प्रतीकात्मक आख्यान भी समाहित है। भास प्रकृति को नाटक का पृष्ठभूमि के साथ सक्रिय पात्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। प्रथम अंक में तपोवन का वर्णन पर्यावरणीय संतुलन और सादगीपूर्ण जीवन का आदर्श प्रस्तुत करता है, जहाँ तपस्वी न्यूनतम संसाधनों के उपयोग से 'सस्टेनेबल लिविंग' की भावना को मूर्त करते हैं। द्वितीय अंक में ऋतु चक्र और माधवी लता मंडप का सौंदर्य मानव-प्रकृति के संवाद का माध्यम बनता है, जो जलवायु संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। तृतीय अंक में वासवदत्ता का वियोग प्रकृति से सान्त्वना पाकर यह संदेश देता है कि प्रकृति मानसिक शांति और आत्मिक उपचार का स्रोत है। चतुर्थ अंक में प्रमदवन का जीवंत चित्रण जैव-विविधता और संतुलित उपयोग के महत्त्व को उजागर करता है। पञ्चम अंक में स्वप्न दृश्य के माध्यम से प्रकृति की आध्यात्मिक सत्ता और संवेदनशीलता का रहस्यमय रूप सामने आता है। नाटक का प्रत्येक दृश्य यह स्पष्ट करता है कि प्रकृति के प्रति करुणा, संतुलन और सम्मान ही मानव संस्कृति की मूल भावना है। भास का यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने दो हजार वर्ष पूर्व ही यह सिखा दिया था कि मानव और प्रकृति का संबंध संरक्षण नहीं, बल्कि सहअस्तित्व पर आधारित होना चाहिए। 'स्वप्नवासवदत्ता' प्राचीन भारतीय पर्यावरणीय चेतना का जीवंत उदाहरण है, जो आज के इको-सिस्टम के युग में भी सन्देश देता है कि प्रकृति की रक्षा ही मानवता की रक्षा है।

**बीज शब्द :-** भास, स्वप्नवासवदत्ता, पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति, तपोवन, प्रमदवन, ऋतु चक्र, जैव-विविधता, सहअस्तित्व, संतुलन, करुणा, सादगीपूर्ण जीवन, इको-क्रिटिसिज्म, सस्टेनेबल लिविंग, प्राचीन भारतीय साहित्य, मानव-प्रकृति सामंजस्य, आध्यात्मिक पर्यावरणवाद, संरक्षण चेतना, तपस्वी जीवन, प्राकृतिक सौंदर्य।

**परिचय-** प्राचीन भारतीय साहित्य में पर्यावरण संरक्षण का चिंतन एक गहन और बहुआयामी विषय रहा है। संस्कृत नाट्य परंपरा, विशेषकर भास जैसे प्रारंभिक नाटककारों की रचनाओं में, प्रकृति को मात्र पृष्ठभूमि के रूप में नहीं, बल्कि मानव जीवन के अभिन्न अंग के रूप में चित्रित किया गया है। भास (लगभग तीसरी शताब्दी ई.पू.) के नाटक 'स्वप्नवासवदत्ता' में यह चिंतन स्पष्ट रूप से झलकता है। यह नाटक वत्सराज उदयन और उनकी पत्नी वासवदत्ता की प्रेमकथा पर आधारित है, जिसमें राजनीतिक षड्यंत्र, त्याग और पुनर्मिलन के माध्यम से मानव-प्रकृति के सामंजस्य को दर्शाया गया है। नाटक के विभिन्न अंकों में वन, नदी, ऋतु चक्र, फूल-पत्तियाँ, पक्षी और वायु जैसे तत्वों का वर्णन मिलता है जो सौंदर्यबोध के साथ पर्यावरण संरक्षण की नैतिक चेतना भी जागृत करता है। भास की शैली सरल, यथार्थवादी और प्रकृति-केंद्रित है। वे प्रकृति को पात्रों की भावनाओं का प्रतिबिंब बनाते हैं, जो आधुनिक इको-सिस्टम की दृष्टि से पर्यावरण संरक्षण का प्रतीकात्मक चित्रण प्रस्तुत करता है। उदाहरणस्वरूप, तपोवन का वर्णन तपस्वियों की सादगीपूर्ण

जीवनशैली के माध्यम से प्रकृति के प्रति सम्मान दर्शाता है, जबकि प्रमदवन के दृश्य मानव हस्तक्षेप के बिना प्रकृति की स्वाभाविकता पर जोर देते हैं।

**प्रथम अंक: तपोवन और प्रकृति का पवित्र सामंजस्य-** नाटक का प्रथम अंक तपोवन के दृश्य से आरंभ होता है, जो पर्यावरण संरक्षण का प्रथम संकेत है। सूत्रधार का प्रवेश और नान्दी के बाद तपोवन का वर्णन भास द्वारा प्रकृति के प्रति श्रद्धा को उजागर करता है। मगधराज दर्शक के भृत्यों द्वारा तपोवन में लोगों को हटाने का प्रयास है -

**"भृत्यैर्मगधराजस्य स्निग्धैः कन्यानुगामिभिः ।**

**धृष्टमुत्सार्यते सर्वस्तपोवनगतो जनः ॥" 1**

इस श्लोक में भास यह दिखाते हैं कि राजकीय अहंकार और भोगलिप्सा के कारण राजा के सेवक तपोवन जैसे शांत और पवित्र स्थान को भी विचलित कर रहे हैं। यह प्रसंग मानवीय अतिक्रमण के विरुद्ध प्रकृति और साधना-स्थलों की रक्षा का संदेश देता है। यौगन्धरायण का प्रश्न देखिए -

**"धीरस्याश्रमसंश्रितस्य वसतस्तुष्टस्य वन्यैः**

**फलै-मानाहंस्य जनस्य वल्कलवतस्त्रासैः समुत्पाद्यते ॥" 2**

इस श्लोक में भास यह दिखाते हैं कि जो तपस्वी व्यक्ति प्रकृति से केवल आवश्यकतानुसार ही ग्रहण करते हैं न तो उसका शोषण करते हैं, न ही भोग की इच्छा रखते हैं, वे भी राजकीय अत्याचार या मानवीय हस्तक्षेप से भयभीत हो रहे हैं। यह प्रसंग प्रकृति की गोद में रहने वाले निर्दोष जीवों और साधकों पर बाहरी अतिक्रमण के दुष्परिणामों की ओर संकेत करता है तथा शांत पर्यावरण को सुरक्षित रखने की प्रेरणा देता है। तपोवन को "निभूतं तपोवनिमदं" (शांत तपोवन) के रूप में चित्रित किया गया है, जहाँ हरिण (हरिगाः) निर्भय विचरते हैं -

**"विस्रब्धं हरिगाश्चरन्त्यचिकता देशागतप्रत्यया वृक्षाः**

**पुष्पफलैः समृद्धविटपाः सर्वे दयारक्षिताः" 3**

तपोवन के शांत, संतुलित और करुणा-प्रधान वातावरण का चित्रण करते हैं। यहाँ न मनुष्य का भय है, न हिंसा — सब जीव स्वतंत्र और सुरक्षित हैं। "दयारक्षिताः" शब्द यह दर्शाता है कि करुणा ही पर्यावरण संरक्षण का सबसे बड़ा आधार है। जब मनुष्य करुणामय होता है, तो प्रकृति स्वयं प्रसन्न और फल-फूलों से परिपूर्ण रहती है। यह श्लोक मानवीय संवेदना और प्राकृतिक संतुलन के गहरे संबंध को प्रकट करता है। ब्रह्मचारी का वर्णन ("भूयिष्ठं कपिलानि गोकुलधनान्यक्षेत्रवत्यो दिशो") खेत-रहित भूमि और गोकुलों का उल्लेख करता है, जो जैव-विविधता के संरक्षण को इंगित करता है। भास यहाँ दर्शाते हैं कि तपोवन जैसी प्राकृतिक जीवन मानवीय अहंकार (उत्सिक्तो विनयादपेतपुरुषो) से मुक्त होनी चाहिए। यह चिंतन वैदिक काल की 'पृथ्वी सूक्त' की याद दिलाता है, जहाँ पृथ्वी को माता माना गया है। इस अंक में पर्यावरण संरक्षण का संदेश स्पष्ट है: प्रकृति मानव की सहचरी है, न कि विजय की वस्तु। तपस्वियों का जीवन (फल-आहार, वल्कल वस्त्र) न्यूनतम संसाधन उपयोग का मॉडल प्रस्तुत करता है, जो आज के कार्बन फुटप्रिंट कम करने की अवधारणा से मेल खाता है। पद्मावती का आगमन और दान-वितरण का चित्रण देखिए -

**"तीर्थोदकानि समिधः कुसुमानि दर्भान्।  
स्वैरं वनादपनयन्तु तपोधनानि"॥<sup>4</sup>**

इस श्लोक में भास ने प्रकृति के संसाधनों के संतुलित और मर्यादित उपयोग का संदेश दिया है। तपस्वीजन केवल उतना ही लेते हैं, जितनी उन्हें आवश्यकता होती है, न अधिक, न कम। यहाँ 'स्वैरं' शब्द का अर्थ 'मनमाने ढंग से' नहीं, बल्कि 'प्राकृतिक मर्यादा के भीतर स्वतंत्रतापूर्वक' है। प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन में प्रकृति से ग्रहण करने की प्रक्रिया शोषण नहीं, सहअस्तित्व पर आधारित थी। यह विचार आधुनिक पर्यावरणीय सिद्धांत - सस्टेनेबल यूज के अनुरूप है।

**द्वितीय अंक: ऋतु चक्र और मानव-प्रकृति का संवाद-** द्वितीय अंक प्रमदवन (माधवी-लता-मंडप) के दृश्य से भरपूर है, जहाँ प्रकृति मानव भावनाओं का दर्पण बनती है। पद्मावती का गेंद खेलना और वासवदत्ता का मजाक-

**"हला ! प्रतिचिरं कन्दकेन क्रीडित्वाधिकसञ्जा।**

**तरागौ परकीयाविव ते हस्तौ संबृत्तौ"॥<sup>5</sup>**

इस श्लोक में वासवदत्ता अपनी सखी (संभवतः पद्मावती) से विनोदपूर्वक कहती है कि गेंद खेलने से उसके हाथ लाल हो गए हैं, जो उसे किसी प्रेमिका के रूप में दर्शाते हैं। भास यहाँ प्रकृति और मानवीय भावनाओं का सुंदर संगम दिखाते हैं — गेंद का खेल, लता-मंडप, लालिमा और लज्जा सब मिलकर वसंत ऋतु के प्रेममय वातावरण का प्रतीक बन जाते हैं।

**"ग्रागमप्रधानानि सुलभपर्यवस्थानानि**

**महापुरुष-हृदयानि भवन्ति"॥<sup>6</sup>**

भास ने महापुरुषों के उदार हृदय की तुलना गाँव या नगर के प्रमुख मार्गों से की है। जैसे मुख्य सड़कें सबके लिए खुली रहती हैं और सबको स्थान देती हैं, वैसे ही महान व्यक्तियों का हृदय भी सबके प्रति करुणा, सहानुभूति और उदारता से भरा रहता है। पर्यावरणीय दृष्टि से यह विचार सह-अस्तित्व और समावेशिता का प्रतीक है — जैसे प्रकृति सबको समान रूप से आश्रय देती है, वैसे ही महापुरुष भी सबको अपनाते हैं। भास यहाँ यह संदेश देते हैं कि सच्ची महानता दूसरों को स्थान देने में है, चाहे वह समाज में हो या प्रकृति के संसार में।

**"पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासीत्।**

**लाघ्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।**

**कालक्रमेण जगतः परिवर्तमानां**

**चक्रपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः॥"॥<sup>7</sup>**

इस श्लोक में भास ने जीवन की परिवर्तनशीलता और भाग्य की अनित्यता का दार्शनिक संदेश दिया है। वक्ता (संभाविततः धात्री या सखी) वासवदत्ता को सांत्वना देते हुए कहती है कि दुःख स्थायी नहीं होता — जैसे चक्र घूमता है, वैसे ही भाग्य भी घूमकर सुख के समय को वापस लाता है। यह श्लोक प्रकृति के कालचक्र से जीवन की तुलना करता है — ऋतुओं की भाँति सुख-दुःख का आवागमन चलता रहता है। यहाँ भास ने प्रकृति और मानव जीवन के संबंध को गहराई से जोड़ा है, जो जीवन में धैर्य, संतुलन और आशा की भावना को प्रकट करता है।

**तृतीय अंक: वियोग और प्रकृति का सान्त्वन-** तृतीय अंक वासवदत्ता के एकाकी दृश्य से आरंभ होता है, जहाँ प्रमदवन (विवाहामोदसडकुले अंतेउरचउस्साले) का वर्णन वियोग की पीड़ा को प्रकृति से जोड़ता है। वासवदत्ता का शोक-

**"धन्या खलु चक्रवाकवधुः,**

**याऽन्योन्यविरहिता न जीवति।<sup>8</sup>**

चक्रवाक पक्षी की जोड़ी को प्रतीक बनाता है, जो पर्यावरणीय सामंजस्य का उदाहरण है—प्रकृति में जोड़े जीवन का आधार हैं, मानव को उनका

अनुकरण करना चाहिए। फूल चुनना (शेफालिकागुल्मकाः) और "सपत्नीमर्दनं" माला का त्याग संरक्षण का संकेत है: वासवदत्ता कहती है, "उपरता तस्य भार्या, तन्निष्प्रयोजनमिति" (पत्नी मर चुकी, व्यर्थ है), जो प्रकृति के संसाधनों के अनावश्यक उपयोग को रोकने का संदेश देता है।

यह अंक प्रकृति को सान्त्वना स्रोत बनाता है: वासवदत्ता का "शय्यायां मम दुःखं विनोदयामि, यदि निद्रां लभे" प्रकृति के साथ एकाकीपन में शांति खोजने का प्रतीक है। भास यहाँ दर्शाते हैं कि पर्यावरण संरक्षण मानसिक स्वास्थ्य का आधार है।

**चतुर्थ अंक: प्रमदवन का सौंदर्य और जैव-विविधता-** भास ने प्रकृति और प्रेम के सामंजस्य को चित्रित किया है। मधुमक्खियाँ और भ्रमर फूलों से मधु लेती हैं, जिससे जैव-विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य का संवेदनशील चित्र सामने आता है।

**"मधुमदकला मधुकरा मदनार्त्ताभः प्रियाभिरुपगूढाः।**

**पादन्यासविषण्णा वयमिव कान्तावियुक्ताः स्युः॥"॥<sup>9</sup>**

यह संदेश मिलता है कि जैसे प्रेमियों का हृदय प्रकृति के सौंदर्य से जुड़ा होता है, वैसे ही प्राणी भी प्राकृतिक संसाधनों का स्नेहपूर्वक उपयोग करते हैं। यह श्लोक संतुलित प्राकृतिक उपयोग और प्रकृति में सौंदर्य और प्रेम का सामंजस्य दर्शाता है। चतुर्थ अंक प्रमदवन का हृदय है, जहाँ भास प्रकृति के सौंदर्य को जीवंत करते हैं।

**"प्रचितपिततबन्धुजीवकुसुमिवरलवात-  
रमगीयं प्रमदवनम्"॥<sup>10</sup>**

भास इस श्लोक में प्रमदवन के सौंदर्य और जैव-विविधता को चित्रित करते हैं। जैसे वृक्ष और पौधे आपस में जुड़े हुए हैं, वैसे ही वन का समग्र वातावरण मानव और प्राणी दोनों के लिए सुखद और संतुलित है। यह श्लोक प्रकृति के संरक्षण और उसकी प्राकृतिक सुंदरता की प्रशंसा का प्रतीक है।

**"ऋज्वायतां च विरलां च**

**नतोन्नतां च सप्तर्षिवंशकुटिलां॥"॥<sup>11</sup>**

यहाँ आकाश में उड़ते पक्षियों की पंक्ति को वर्णित किया गया है। कुछ पक्षी सीधे उड़ते हैं (ऋज्वायता), कुछ विरले (विरला), कुछ ऊँचाई की ओर (नतोन्नता) और कुछ झुकी हुई या घुमावदार (सप्तर्षिवंशकुटिला) उड़ान भरते हैं। भास ने पक्षियों की विविध उड़ान के माध्यम से प्रकृति की संतुलित विविधता और जैविक सौंदर्य को दर्शाया है। यह श्लोक प्राकृतिक संतुलन और जैव-विविधता के संरक्षण का प्रतीक है, जहाँ प्रत्येक प्राणी अपनी भूमिका में स्वतंत्र और सुरक्षित है।

**"मधुमदकला मधुकरा मदनार्त्ताभः**

**प्रियाभिरुपगूढाः॥"॥<sup>12</sup>**

मधुमक्खियाँ और भ्रमर, जो मधु संग्रहीत करती हैं, प्रेम में रुचि रखने वाले प्रिय व्यक्तियों के पास जाकर फूलों से मधु लेती हैं। भास ने यहाँ प्रकृति और प्रेम के सामंजस्य को दर्शाया है। मधुमक्खियाँ फूलों से मधु लेकर वन की जैव-विविधता और सुंदरता को बनाए रखती हैं। "प्रियाभिरुपगूढाः" यह बताता है कि प्रकृति में हर प्राणी प्रेम और स्नेह के साथ संसाधनों का उपयोग करता है। यह श्लोक संतुलित प्राकृतिक उपयोग और प्रकृति में सौंदर्य और प्रेम का सामंजस्य का प्रतीक है।

**"इमानपिचतकुसुमान्**

**शेफालिकागच्छान्"॥<sup>13</sup>**

ये छोटे-छोटे शेफालिका के फूल हैं, जिन्हें (सौंदर्य या उपयोग हेतु) उठाया या चुना जा सकता है। भास यहाँ प्रकृति के संसाधनों के संतुलित और मर्यादित उपयोग का संदेश देते हैं। जैसे वासवदत्ता केवल आवश्यकतानुसार फूल चुनती है, वैसे ही मानव को भी प्रकृति के

उत्पादों का अत्यधिक शोषण नहीं करना चाहिए। यह श्लोक जैव-विविधता के संरक्षण और सस्टेनेबल उपयोग का प्रतीक है।

**पञ्चम अंक: स्वप्न दृश्य और प्रकृति का रहस्यमय संरक्षण--**  
पञ्चम अंक स्वप्न दृश्य से समाप्त होता है, जहाँ राजा का स्वप्न ("हा वासवदत्ते!") प्रकृति के माध्यम से प्रकट होता है। समुद्रगृह का वर्णन (दीपप्रभावसूचितरूपो) कृत्रिम प्रकाश प्राकृतिक अंधकार का संतुलन दर्शाता है। वासवदत्ता का हाथ रखना ("शय्याप्रलम्बितमार्यपुत्रस्य हस्तं") प्रकृति के सेज को पवित्र बनाता है।

**"स्वप्नस्यान्ते विबुद्धेन  
नेत्रविप्रोषिताञ्जनम्"।<sup>14</sup>**

नेत्रों की प्राकृतिक सुंदरता (काजल-रहित) को संरक्षण का प्रतीक बनाता है। रोमांच ("योऽयं सन्त्रस्तया देव्या तथा बाहुनिपीडितः") स्पर्श से प्रकृति की संवेदनशीलता दर्शाता है।

**निष्कर्ष:** 'स्वप्नवासवदत्ता' में पर्यावरण संरक्षण का चिंतन सर्वव्यापी है, तपोवन से प्रमदवन तक, ऋतु से पक्षी तक। भास प्रकृति को संरक्षित रखने को नैतिक कर्तव्य बनाते हैं, जो आज के सस्टेनेबल डेवलपमेंट से मेल खाता है। नाटक हमें सिखाता है कि मानव और प्रकृति का सामंजस्य ही सच्चा संरक्षण है।

\*\*\*\*\*

**संदर्भ: -**

1. 'स्वप्नवासवदत्ता' -भास, नंदप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली ११०००७ द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, ए-2. नारायणा, फेज-१, नई दिल्ली ११० प्रथम अंक- श्लोक २
2. वही- प्रथम अंक (श्लोक ३)
3. वही - प्रथम अंक (श्लोक १२)
4. वही- प्रथम अंक (श्लोक ६)
5. वही- द्वितीय अंक (समय चक्र और प्रकृति परिवर्तन) (श्लोक ४)
6. वही - द्वितीय अंक, समय चक्र और प्रकृति परिवर्तन। (श्लोक -७ )
7. वही - द्वितीय अंक, समय चक्र और प्रकृति परिवर्तन। (श्लोक -८ )
8. वही तृतीय अंक श्लोक १३
9. वही -चतुर्थ अंक (प्रमदवन का सौंदर्य) (श्लोक ३)
10. वही -चतुर्थ अंक (प्रमदवन का सौंदर्य) (श्लोक ३)
11. वही -चतुर्थ अंक (प्रमदवन का सौंदर्य) (श्लोक १६ )
12. वही -चतुर्थ अंक (प्रमदवन का सौंदर्य) (श्लोक १७ )
13. वही -चतुर्थ अंक (प्रमदवन का सौंदर्य) (श्लोक १८ )
14. वही -पंचम अंक श्लोक १०

## Implementation of Right to Equality under the Indian Constitution: Challenges and Solutions

**Daljan Singh**

(M.A., LLB, ADR, CHR, PGDCJ, LLM)

Address: village vishma post-aseh district kannauj uttar Pradesh India 209729

Email id: daljanjansingh111@gmail.com

**Abstract-**The Right to Equality is one of the foundational guarantees of the Indian Constitution and plays a central role in India's democratic and social transformation agenda. Enshrined primarily in Articles 14–18 and supplemented by equality-related provisions across the Constitution, this right seeks to eliminate arbitrary discrimination and to secure substantive fairness. However, translating constitutional guarantees into lived equality has proved complex: social hierarchies, economic disparities, administrative inertia, incomplete legislation, judicial overload, and implementation gaps have all constrained outcomes. This paper examines the constitutional framework and judicial interpretation of the Right to Equality, surveys institutional mechanisms for implementation, analyzes major challenges that obstruct realization of equality in India, and recommends a set of legal, administrative, social and policy solutions to make equality effective in practice. Comparative references and empirical recommendations are provided to bridge the gap between formal guarantees and substantive equality.

**Keywords:** Right to Equality, Articles 14–18, affirmative action, discrimination, implementation, India, constitutional law, equality jurisprudence.

**Introduction-**The aspiration to secure equality for all citizens is woven into the very fabric of the Indian Republic. The framers of the Constitution placed equality among the core values of the new polity; the Preamble's promise of justice—social, economic, and political—echoes throughout the constitutional text. Articles 14 to 18 crystallize the Right to Equality: Article 14 promises equality before the law and equal protection of laws; Article 15 prohibits discrimination on specified grounds; Article 16 secures equality of opportunity in public employment; Article 17 abolishes untouchability; and Article 18 abolishes titles. Supplementing these are equality-sensitive provisions in fundamental rights (for example, protection of life and personal liberty under Article 21) and directive principles that inform state policy.

Despite strong textual protections and a prolific jurisprudence that expanded the meaning of equality (covering substantive as well as formal equality), India